DOI: 10.51220/hjssh.v5i1.11
Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 5 pp.95 -102, December, 2010, ISSN. 0975 - 9891

रवीन्द्रनाथ टैगोर की कहानियों में नारी की सामाजिक स्थिति का चित्रण

राखी उपाध्याय
हिन्दी विभाग, डी0ए0वी0 (पी0जी0) कॉलेज, देहरादून
ई–मेल drrakhi_418@rediffmail.com

Received: 10-10-2010 **Revised: 17-11-2010** **Accepted: 24-12-2010**

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध में टैगोर की कहानियों में नारी की सामाजिक स्थिति समाज को बनाने तथा विकसित करने में पुरुष के समान ही नारी का भी विशेष महत्त्व है। उस तथ्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

Key Words—रवीन्द्रनाथ टैगोर, नारी चित्रण, सामाजिक स्थिति।

टैगोर की कहानियों में नारी की सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है। समाज को बनाने तथा विकसित करने में पुरुश के समान ही नारी का भी विशेष महत्त्व है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी कहानियों में नारी की स्थिति को दर्शाते हुए उसके समाज में महत्त्व को भी दर्शाया है। कहीं–कहीं पर टैगोर ने अधिकार वंचित नारी का चित्रण किया है। शील, संकोच, लज्जा को नारी के गुण–धर्म के रूप में चित्रित किया गया है। हालाँकि इन सबके बावजूद टैगोर ने अपनी कहानियों में यत्र–तत्र नारी के गौरवपूर्ण आख्यान भी दिए हैं। इन्होंने अपनी कहानी की आम नारियों के अनेक रूपों–ममतामयी माँ, अभावों संघर्षों व विपन्नता से जूझती स्त्री का चित्रण किया है। परन्तु इसके साथ ही इन्होंने अपनी कहानियों में नारी के अनेक रूपों का महत्त्व भी बताया। नारी के इन्हीं रूपों का चित्रण रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस प्रकार किया है–

"मैं आराम–कुर्सी के दोनों बाजुओं पर दोनों पैर रखकर सिगरेट पीते–पीते सोचने लगा, पुरुष के जीवन के चार आश्रमों के चार अधिदेवता हैं। बाल्यावस्था में माँ, यौवनवस्था में पत्नी, प्रौढ़ावस्था में कन्या, पुत्रवधू, वृद्धावस्था में नातिनी, नातबहू। इस प्रकार स्त्री के द्वारा पुरुष अपनी पूर्णता प्राप्त करता है।"[1]

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने निम्नवर्गीय नारी का मार्मिक व हृदयस्पर्शी चित्रण अपनी कहानियों में सहजता से किया है। निम्नवर्गीय नारी का समाज में कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस सत्य को टैगोर जी ने अपनी कहानियों में उद्‌घाटित किया है। समाज की प्रतारणायें नारी अपने कंधों पर ढ़ोती रहती हैं। परिस्थितियाँ अपने बहाव में उसे कहीं पर भी ले जाकर फेंक देती हैं। नारी की इसी दीन–हीन दशा का चित्रण रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस प्रकार किया है–

"कपड़ों में कीचड़ लपेटे, अद्‌भुत भावों में डूबी और रात्रि–जागरण के कारण पागल के समान कादम्बिनी के चेहरे की जो दशा हो गयी थी उसे देखकर सम्भव था कि लोग डर जाते और लड़के शायद दूर भाग उस पर ढेले फेंकने लगते।"[2]

©SHARAD

निम्नवर्गीय नारी में प्रमुख रूप से लेखक ने अनाथ बालिका, विधवा स्त्री, मजदूरी करने वाले व्यक्ति की पत्नी, आर्थिक रूप से विपन्न स्त्रियों का चित्रण किया है। समाज में निम्न वर्ग की नारी निःसहाय लेकिन स्वाभिमानी है। वह अनाथ है, स्वभाव से भोली है। अनाथ या गरीब होने पर भी नारी कर्त्तव्यनिष्ठ है। वह अपने सारे काम पूरे मनोयोग से करती हैं। इस वर्ग की नारी अनपढ़ है, लेकिन वह पढ़ने–लिखने का महत्त्व अच्छी तरह से जानती हैं।

नारी अपनी परिस्थितियों से इतनी लाचार हो जाती है कि उसे मरकर यह प्रमाणित करना पड़ता है कि वही जीवित थी यानि समाज स्त्री के अस्तित्व को नकारने में भी हिचकता नहीं है और उसके अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा देता है। वास्तव में, स्त्री जीवन–पर्यन्त सबकी सेवा करती है, लेकिन उसकी विषम परिस्थितियों में कोई भी उसका साथ नहीं देता। एक विधवा स्त्री जो जीवन भर पूरे परिवार की सेवा करती है, उसको उन्हीं परिवार वालों के सामने जीवित रहने की प्रमाणिकता के लिए मृत्यु का वरण करना पड़ता है–

"तब कादम्बिनी 'अरे! मैं मरी नहीं हूँ रे, नहीं मरी–'चीखती हुई कमरे से बाहर निकलकर सीढ़ियों से उतरी हुई अन्तःपुर की पुष्करिणी में कूद पड़ी"।[3]

एक अनाथ जीवन–भर एक सहारे के लिए तरसती है। वह पूरी स्वामीभक्ति के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन करती है, परन्तु अन्त में वह निःसहाय होकर जीवन जीने के लिए मजबूर है–

"लेकिन रतन उस पोस्ट ऑफिस के चारों ओर चुपचाप आँसू बहाती चक्कर काटती रही। शायद उसके मन में हल्की सी आशा जीवित थी कि हो सकता है, भैयाजी लौट आए।"[4]

निम्नवर्गीय नारी भले ही आर्थिक रूप से विपन्न हो, लेकिन उसके अन्दर अदम्य साहस है। हालाँकि पुरुष जैसा चाहे वैसा बर्ताव उसके साथ करता है। एक स्त्री अपने पति को दिए हुए वचन को निभाने के लिए मृत्यु तक का वरण कर लेती है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी एक कहानी में ऐसी नारी का चित्रण किया है जो आर्थिक रूप से कमजोर और निम्न वर्ग की है, लेकिन निर्दोष होने पर भी पति के वचन को पूरा करने के लिए मृत्यु का वरण कर लेती है।

"ऐसी अदम्य औरत भी नहीं मिलती। एकदम प्राणपण से फांसी के तख्ते पर चढ़ने के लिए तुली थी, किसी भी तरह उसको घेरकर रखना सम्भव नहीं था। यह कैसा भीषण हठ था। चन्दरा मन ही मन पति से कह रही थी मैं तुम्हें छोड़कर अपने इस नवयौवन को लेकर फाँसी के तख्ते को वरण कर रही हूँ– मेरे जीवन का अन्तिम बन्धन अब उसी के साथ है।"[5]

समाज को विकसित करने या आगे बढ़ाने में जितना योगदान पुरुष का है, उतना ही नारी का भी है, फिर भी यह समाज नारी के अस्तित्व को महत्त्व नहीं देता है। लेखक ने इसका चित्रण स्पष्ट रूप से किया है कि इतने बड़े समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान देने पर भी नारी को इसमें उचित स्थान नहीं मिलता। वह समाज मे स्थान पाने के लिए छटपटाती है लेकिन उसको सिर छुपाने के लिए भी स्थान नहीं मिलता। वह ईश्वर से भी प्रश्न करती है कि अगर उसका समाज में कोई स्थान नहीं है तो फिर वह कहाँ जाए? इसका सटीक उदाहरण टैगोर जी की एक कहानी में इस प्रकार है–

"लेकिन मरने के अलावा तुम लोगों की दृष्टि में और क्या अपराध किया है? मेरे लिये अगर न इस लोक में स्थान है, न परलोक में तो फिर हाय! मैं कहाँ जाऊँ?"

जोर से चीखकर वह मानो उस घोर वर्षा के रात में सोते हुए विधाता को जगाकर पूछ उठी, "हाय! तो फिर मैं कहाँ जाऊँ"।[6]

इसी तरह विधवा स्त्री की दयनीय दशा का चित्रण भी लेखक ने अपनी कहानियों में किया है। समाज में उसकी स्थिति गौण है। विधवा नारी का समाज में जीना दूभर हो जाता है। अपने परिवार का पालन–पोषण वह बड़ी मुश्किल से कर पाती है क्योंकि समाज में कोई भी उसका साथ देने वाला नहीं है। समाज ऐसी स्त्रियों को हेय दृष्टि से देखता है। फलतः एक विधवा स्त्री जीवन भर असीम कष्ट सहकर अपने परिवार को संजोती है–

"विधवा को किसी समाज में स्थान न मिलने के कारण उन्होंने बिल्कुल अकेली रहकर इस लड़की को लिखना–पढ़ना सिखाकर पाला–पोसा। उस समय लड़की की आयु पच्चीस से ऊपर होगी। माँ का शरीर रुग्ण था और आयु भी कम न थी। किसी दिन वे मर जायेंगी, इस लड़की का कहीं कोई ठिकाना न होगा।"[7]

निम्नवर्गीय स्त्री को कभी–कभी माँ के साथ ही पिता का पद भी संभालना पड़ता है। पूरे परिवार का उत्तरदायित्व उसी के ऊपर होता है। घर की हर व्यवस्था को उसे ही देखना पड़ता है। वास्तव में निम्नवर्गीय नारी को प्रत्येक कदम पर संघर्षों का सामना करना पड़ता है। वास्तव में नारी घर में और घर के बाहर पुरुष का साथ निभाती है। लेकिन नारी के दासीत्व भाव का पुरुष ने अनुचित लाभ उठाया। नारी उसके लिए सम्पत्ति मात्र रह गई। पति अपनी पत्नी को अपनी सम्पत्ति समझते हुए उस पर अपराधी का कलंक लगाते हुए भी नहीं हिचकता–

"छिदाम ने अपनी स्त्री चन्दरा से अपनी ऊपर अपराध ले लेने का अनुरोध किया। उस पर जैसे वज्रपात हुआ। छिदाम ने आश्वासन देते हुए उससे कहा–"जो कर रहा हूँ, वही कर, तुझे भय नहीं है, हम तुझे बचा लेंगे"।

आश्वासन तो दे दिया, किन्तु गला सूख गया और मुंह का रंग फीका पड़ गया"।[8]

आर्थिक समस्याओं को लेकर भी कन्या जीवन उपेक्षणीय हो जाता है। उसका वह देवी का स्वरूप लुप्त हो जाता है, और वह परिवार के लिए एक आपत्ति हो जाती है। इसीलिए लोग पुत्री के प्रति अवांछित रहते हैं। पुत्र जन्म में जहाँ शहनाइयाँ बजती हैं, पुत्री–जन्म पर वहीं गहरी उदासी छा जाती है। समाज में विवाह की समस्या और दहेज जैसी कुप्रथाओं के कारण जन्म लेते ही कन्या अपने परिवार पर भार स्वरूप हो जाती है। भावी आपत्तियों की कल्पना मात्र से ही माता–पिता चिन्तित होने लगते हैं।

टैगोर जी ने अपनी कहानी में कन्या की दयनीय दशा के मार्मिक चित्र उकेरे हैं। एक पिता के लिए अपनी बेटी की शादी करना उसको ठिकाने लगाने जैसा या बोझ से मुक्त होना जैसा है। इस स्थिति पर लेखक इस प्रकार प्रकाश डालता है–

"जिस दिन नन्हीं सी उम्र में एक काली–कलूटी छोटी से बालिका अपना गोल–मटोल चेहरा लिये खेलने की गुड़िया पटककर अपने बाप के घर से ससुराल आई थी, उस दिन रात में शुभलग्न के समय आज की इस बात की कल्पना कौन कर सकता था। उसका पिता मरते समय यह कहकर निश्चिन्त हो गया था, 'चलो अपनी बेटी तो ठिकाने लग गई"।[9]

निम्नवर्गीय नारी धर्म पर भी अटल विश्वास रखती है। अपने घर में होने वाले धार्मिक त्यौहार को वह श्रद्धा एवं प्रेमपूर्वक मनाती है। हालांकि निम्न वर्ग की नारी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, लेकिन वह प्रत्येक धार्मिक रीति–रिवाज को सहजता से सम्पन्न करती है। टैगोर जी ने धार्मिक माध्यम से बंगाल की प्रसिद्ध दुर्गा पूजा का चित्रण किया है।

दुर्गा पूजा के समय उन्हें याद आता, मालिकों के राज में नई सज–धज के साथ वे किस प्रकार उत्साह का अनुभव करते थे। दुर्गापूजा के दिन रासमणि ने कालीपद के लिए जिन सस्ते कपड़ों की व्यवस्था की थी, बीते जमाने में उनके घर के नौकर भी उन पर आपत्ति जताते।[10]

टैगोर जी ने निम्न वर्गीय नारी का चित्रण तो किया ही है साथ में मध्यवर्गीय नारी की सामाजिक स्थिति का चित्रण भी अपनी कहानियों में किया है। इस वर्ग में उन्होंने पति–पत्नी के सम्बंध, पिता–पुत्र के सम्बंध तथा प्रेम–प्रेमिका के सम्बन्ध को दर्शाया है।

मध्यवर्गीय नारी की स्थिति इतनी दयनीय नहीं है जितनी कि निम्नवर्गीय नारी की स्थिति है। इस वर्ग की नारी को परिवार में सम्मानजनक स्थिति प्राप्त है। इतने पर भी पुरुष नारी पर अपना अधिकार समझता है। पुरुष समझता है कि वह चाहे जैसा भी व्यवहार नारी के साथ करे उसका हक है। पुरुष का नारी के प्रति यह दृष्टिकोण लेखक ने अपनी एक कहानी में इस प्रकार दर्शाया है–

"मैं जब तब उससे ज्यादती करता रहता। वह भी हर तरह से मेरी फरमाइश पूरी करती। मुहल्ले में उसकी रूप की प्रशंसा थी, किन्तु मेरी नजर में उस सौन्दर्य का कोई महत्त्व नहीं था..मैं तो बस इतना जानता था कि सुरबाला ने अपने पिता के घर में, मेरा प्रभुत्व स्वीकार करने के लिए ही जन्म लिया है। इसीलिए मैं जैसा चाहूँ करुं।"[11]

वास्तव में स्त्री अपना सब कुछ पुरुष को सौंप देती है। पत्नी पति को अपना दोस्त समझती है। चाहे सुख हो या दुःख वह अपने पति की छाँव में ही जीवन व्यतीत करना चाहती हैं। वह समझती है कि उसका पति जो भी निर्णय लेगा उसको उसे मानना की चाहिए। नारी सम्पूर्ण रूप से अपने आपको पुरुष के प्रति समर्पित कर देती है। इस स्थिति का चित्रण लेखक ने इस प्रकार किया है–

"फिर सोचा, भाइयों ने जब मेरा दान कर ही दिया है, तब मेरे प्रति कर्त्तव्य को लेकर यह खींच–तान क्यों? मेरा सुख–दुःख मेरा रोग और स्वास्थ्य, अब तो सभी–कुछ मेरे पति का है।"[12]

वास्तव में भारतीय नारी अपने पति की सेवा करना अपना सौभाग्य समझती है। पुरुष, चाहे उसे जितना भी महत्त्व दे लेकिन नारी सच्चे जीवन साथी की तरह उसका साथ निभाती हैं। वह सुख–दुःख में प्राण पण से अपने पति का साथ निभाती है। स्त्री अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से मृत्यु को हराने की क्षमता भी रखती है। इस तथ्य को लेखक ने इस प्रकार स्पष्ट किया है–

"बीमारी के समय मेरी स्त्री ने दिन–रात सेवा की, एक पल भी आराम नहीं किया। उन दिनों एक अबला स्त्री ने, मनुष्य की सामान्य शक्ति के सहारे प्राणपण से व्याकुलता के साथ द्वार पर आए हुए यमदूतों से अनवरत युद्ध किया।"[13]

पुरुष अपने अहम् की वजह से स्त्री को अपने जीवन में महत्त्व नहीं देता। उसके जीवन में अन्य कार्य महत्वपूर्ण होते हैं, लेकिन स्त्री को वह गौण समझता है। लेकिन जब स्त्री उससे दूर चली जाती है, तब पुरुष को उसके महत्व का पता चलता है। अपने झूठे सिद्धान्तों की वजह से अपनी सहभागिनी यानि अपनी प्रेमिका को खो देता है। बाद में पछताने के अलावा वह कुछ नहीं कर सकता। समाज में कोई भी कार्य नारी के साथ से ही परिपूर्ण होता है। नारी के महत्व को पुरुष के जीवन में लेखक ने इस प्रकार चित्रित किया है–

"सच बात है सुरबाला मेरी क्या नहीं हो सकती थी। जो मेरी सबसे अधिक अंतरंग, सबसे निकटवर्त्तिनी, मेरे जीवन के समस्त सुख–दुःख की समभागिनी हो सकती थी। वह अब इतनी दूर इतनी पराई हो गई है कि आज उसको देखना और बात करना भी अपराध है। उसके विषय में सोचना पाप है।"[14]

स्त्री को प्रत्येक कदम पर संघर्ष का सामना करना पड़ता है। उसे अपने परिवार को संजोये रखने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करना पड़ता है। नारी अनेक रुपों में अपने परिवार की सेवा करती है तथा उसे सुदृढ़ बनाती है। एक स्त्री किस यत्न से अपने परिवार को सुदृढ़ता प्रदान करती हैं, इसकी स्पष्टता इन शब्दों से व्यक्त होती है

"स्त्री को जन्म लेने पर इतना झूठ भी बोलना पड़ता है! भैया के मन को भी नहीं दुखाना चाहती, पति के यश को भी कम करते नहीं बनता। माँ होकर गोद के शिशु को बहलाना पड़ता है, स्त्री होकर शिशु के पिता को बहलाना पड़ता है–औरतों के लिए इतनी छलना आवश्यक है"।[15]

मध्यवर्गीय नारी की स्थिति के चित्रण में लेखक ने पिता और पुत्री के प्यार भरे रिश्ते को भी चित्रित किया है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि पिता–पुत्र की अपेक्षा पुत्री को अधिक स्नेह की दृष्टि से देखता है। नारी का बालिका के रूप में चित्रण टैगोर ने अपनी कहानियों में सहज रूप से किया है। कन्या रूप की मधुर झाँकी उसका शैशव है। कन्या के इसी रूप का चित्रण एक लेखिका ने इस प्रकार किया है–

"मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी
नन्दन वन सी फूल उठी, यह छोटी से कुटिया मेरी"[16]

इसी तरह टैगोर जी ने नारी के बालिका रूप का वर्णन अपनी कहानियाँ में किया है। अपनी एक कहानी में उन्होंने अपनी पुत्री बेला के स्वरूप को भी अंकित किया है। इन्होंने एक छोटी सी बालिका का सहजता से चित्रण इस प्रकार किया है–

"मेरी पाँच बरस की छोटी बेटी मिनी बिना बोले एक पल भी नहीं रह सकती। संसार में जन्म लेने के बाद भाषा सीखने में उसने केवल एक वर्श का समय खर्च किया था। उसके बाद से जब तक वह जगती रहती है, एक पल भी चुप रहने में नष्ट नहीं करती। उसकी माँ बहुत बार डॉक्टर उसका मुँह बन्द कर देती है, किन्तु मैं ऐसा नहीं कर पाता। अब तो उसका बोलते रहना स्वाभाविक है और चुप हो जाना अस्वाभाविक है"।[17]

इसी तरह से नारी मातृ–रूप में भी पुरुष का सम्बल होती है। सामाजिक दृष्टि से भी नारी का मातृरूप उसका अत्यन्त उपयोगी तथा आवश्यक रूप है। माता अपनी आशाओं के केन्द्रबिन्दु पुत्र को सदैव प्रसन्नमुख देखना चाहती है, भले ही वह दुःखाक्रान्त बनी रहे। उनके जीवन का सम्पूर्ण सुख पुत्र की हास्य रेखाओं के साथ क्रीड़ा किया करता है। टैगोर ने भी नारी का मातृरूप अत्यन्त विशिष्ट तथा महत्त्वपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया है। पुत्र मिलन के समय माता का हृदय कैसा हर्शोल्लासित होता है, इसका स्पष्ट चित्र इन शब्दों में वर्णित है–

"पुत्र के अचानक आने से उसकी विधवा माँ पुलकित हो गई। तत्क्षण रबड़ी, दही, रोहू मछली की खोज में आदमी इधर–उधर दौड़ गए और अड़ोस–पड़ोस में हलचल मच गई"।[18]

इस तरह से नारी अनेक रूपों में समाज में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वह आरम्भ से ही संघर्षों का सामना बड़ी निर्भीकता से करती है। प्राचीन समय में बचपन में ही स्त्रियों का विवाह कर दिया जाता था। फलस्वरूप नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता था। नारी को जीवन भर अग्नि परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। नारी की इसी स्थिति का चित्रण इस प्रकार किया गया है–

"बचपन से ही मेरी अग्नि–परीक्षा आरम्भ हो गई। चौदह वर्ष पूरे होने के पहले ही मैंने एक मातृ शिशु को जन्म दिया, स्वयं भी मृत्यु के समीप पहुँच गई थी, किन्तु जिसके भाग्य में दुःख बँधा होता है वह मर कैसे सकता है"।[19]

वास्तव में नारी अपने पति के जीवन को सुखमय बनाने के लिए हरएक सम्भव प्रयास करती है। वह चाहती है कि उसका पति हमेशा खुश रहे। पुरुष के सुखमय जीवन के लिए स्त्री के लिए स्त्री अपना स्थान किसी दूसरी स्त्री को देने के लिए भी नहीं हिचकती। हालांकि यह उसकी मजबूरी होती है, लेकिन पुरुष की सुख–सम्पन्नता के लिए वह अपनी खुशी का त्याग करने के लिए भी तत्पर हो जाती है। टैगोर जी ने इस स्थिति को इन शब्दों में दर्शाया है–

"तब एक दिन मेरी पत्नी ने मुझसे कहा, जब न तो व्याधि ही दूर होती है औ न मेरे जल्दी मरने की ही कोई आशा है तब और कितने दिन इस तरह जीवन काटोगे। तुम दूसरा विवाह कर लो"।[20]

टैगोर जी की कहानियों में निम्नवर्गीय नारी के तरह मध्यवर्गीय नारी भी धर्म–कर्म पर विश्वास करती है। धर्म में अत्यधिक विश्वास कभी–कभी अन्धविश्वास का कारण भी बन जाता है। भोली नारी का विश्वास भाग्यवाद एवं अन्धविश्वासों के प्रति इतना अधिक रहा कि प्रायः इनका परिणाम उनकी भावना या उनके विचारों के अनुकूल सा भी होता देखा गया है।

"उसकी माँ पत्थर के कोयले तक को गंगा–जल से धोकर भोजन पकाती थी, जीवधात्री वसुन्धरा के नाना जातियों को धारण करने के कारण उसका स्पर्श करने में वे हमेशा संकोच करती थीं, वे अधिकांशतः जल का ही व्यवहार करती थीं, क्योंकि जलचर मत्स्यादि– मुसलमान–वंशीय नहीं है और जल प्याज नहीं होता"।[21]

वास्तव में नारी के हृदय की सहज दुर्बलता इन अंधविश्वासों के प्रति एक प्रच्छन्न मोह बनाए रखती है। पति अथवा पुत्र की कल्याण–कामना उसके जीवन की सबसे बड़ी बलवती कामना होती है और इसी कारण से अन्धविश्वासों को वह अपने जीवन से दूर नहीं फेंकना चाहती। नारी अपने परिवार के सुख–समृद्धि की कामना करती है। फलतः वह ईश्वर पर अटल विश्वास करती है। यहाँ तक कि अच्छे पति या पुत्र–कामना से वह ईश्वर की भक्ति करती है।

आजकल बहुत सी बंगाली लड़कियों को स्वयं प्रयत्न करके पति ढूंढना पड़ता है। मैंने भी यही किया है, किन्तु देवता की कृपा से मैंने बचपन से ही बहुत से व्रत और काफी शिव–पूजा की थी। आठ वर्ष की आयु में ही मेरा विवाह हो गया था। किन्तु पूर्व जन्म के पापों के कारण मैं पति को पाकर भी पूरी तरह न पा सकी। माँ दुर्गा ने मेरी आँखें ले लीं। जीवन के अन्तिम क्षण तक पति को देखने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ"।[22]

निष्कर्षतः, कहा जा सकता है कि रवीन्द्रनाथ के अध्ययन, चिन्तन एवं मनन का क्षेत्र व्यापक है। उनका यह व्यक्तित्व उनकी समस्त कहानियों में स्पष्ट झलता है। उन्होंने एक ओर भारतीय संस्कृति एवं दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृति दोनों का सूक्ष्म अध्ययन द्वारा समझाने का प्रयत्न किया है। इसी कारण कवि रवीन्द्रनाथ की कहानियों में समाज उपेक्षित नहीं है। उनकी कहानियों में मानवीय सुख–दुख एवं समाज पूर्णतया प्रतिबिम्बित है। 'पथ के साथी' में रवीन्द्रनाथ के लिए महादेवी वर्मा ने लिखा है–"कवीन्द्र में ऐसी क्षमता थी और उनकी इस सृजन–शक्ति की प्रखर विद्युत को आस्था की सजलता संभाले रहती थी। यह बादल भरी बिजली जब धर्म की सीमा छू गई तब हमारी दृष्टि के सामने फैले रुढ़ियों के रन्ध्रहीन कुहरे में विराट मानव–धर्म की रेखा उद्भासित हो उठी। जब वह साहित्य में स्पन्दित हुई तब जीवन के मूल्यों की स्थापना के लिए तत्त्व, सत्यमय, सत्य, शिवमय और शिव सौन्दर्यमय होकर मुखर हो उठा।"

आभार

मैं विश्वविद्यालय अनुसन्धान आयोग की हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने अनुसंधान कार्य हेतु वित्तीय सहयोग प्रदान किया। साथ ही डॉ0 पुष्पा खण्डूड़ी, विभागाध्यक्षा, हिन्दी विभाग, डी0ए0वी0 (पी0जी0) कॉलेज, देहरादून की भी आभारी हूँ, जिनका सहयोग समय–समय पर मुझे मिल सका।

सन्दर्भ

1.पात्र और पात्री, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–101
2.जीवन और मृत, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–21
3.जीवन और मृत, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–27
4.पोस्टमास्टर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–12

5.सजा, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–31
6.जीवन और मृत, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–25
7.पात्र और पात्री, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–102
8.सजा, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–37
9.सजा, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–41
10.रासमणि का बेटा, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–127
11.एक रात, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–13
12.दृष्टिहीन, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–106
13.आधी रात में, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–75
14.एक रात, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–15
15.दृष्टिदान, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–108
16.मुकुल, सुभद्राकुमारी चौहान, पृ0सं0–47
17.काबुलीवाला, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–28
18.समाप्ति, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–43
19.दृष्टिदान, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–106
20.आधी रात में, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–76
21.पात्र और पात्री, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पृ0सं0–97
22.दृष्टिहीन, रवीन्द्र नाथ टैगोर, पृ0सं0–106